This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **702**

Unique Paper Code : **205639** **D**

Name of the Paper : **Hindi Language-A**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi-A**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(*i*) विशद-चित्रपटी ब्रजभूमि की।

रहित आज हुई वर चित्र में॥

छवि यहाँ पर अंकित जो हुई।

अहह लोप हुई सब-काल को॥

(*ii*) मुदित गोकुल की जन-मण्डली।

जब ब्रजाधिप सम्मुख जा पड़ी॥

निरखने मुख की छवि यों लगी।

तृषित-चालक ज्यों धन की घटा॥

P.T.O.

(ख) किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10=20

(*i*) सुधा, मैं जानता हूँ मैं तुम पर शायद बहुत सख्ती कर रहा हूँ लेकिन तुम्हारे सिवा और कौन है मेरा बताओ ? तुम्हीं पर अपना अधिकार भी आजमा सकता हूँ। विश्वास करो मुझ पर सुधा, जीवन में अलगाव, दूरी, दु:ख और पीड़ा आदमी को महान बना सकती है। भावुकता और सुख हमें ऊँचे नहीं उठाते। बताओ सुधा, तुम्हें क्या पसंद है ? मैं ऊँचा ऊठूँ तुम्हारे विश्वास के सहारे, तुम ऊँची उठो मेरे विश्वास के सहारे, इससे अच्छा और क्या है सुधा! चाहो तो मेरे जीवन को एक पवित्र साधन बना दो, चाहो तो एक छिछली अनुभूति।

(*ii*) प्यारी। वे अधर्म्म से लड़े, हम तो अधर्म्म नहीं कर सकते। हम आर्यवंशी लोग धर्म्म छोड़ कर लड़ना क्या जानें ? यहाँ तो सामने लड़ना जानते हैं। जीते तो निज भूमि का उद्धार और मरे तो स्वर्ग। हमारे तो दोनों हाथ लड्डू हैं; और यश तो जीतै तो भी हमारे साथ है और मरै तो भी।

(*iii*) और अगर अपने उस अन्तर्द्वन्द्व के क्षणों में तुम पर कठोर हो जाती हूँ, तो तुम सह लेते हो। मैं जानती हूँ, तुम मुझे जितना स्नेह करते हो, उसमें मेरी सभी दुर्बलताएँ धुल जाती हैं। लेकिन आज मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ चन्दर कि मुझे खुद अपनी दुर्बलताओं पर शरम आती है और आगे से मैं वैसा ही बनूँगी जैसा तुमने सोचा है।

2. 'गुनाहों के देवता' उपन्यास में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

अथवा

सुधा के विवाह-संस्था संबंधी विचारों का मूल्यांकन कीजिए। 12

3. 'नीलदेवी' नाटक की कथा योजना पर विचार कीजिए।

अथवा

'नीलदेवी' नाटक के गीतों की समीक्षा कीजिए। 12

4. प्रियप्रवास के प्रथम सर्ग में चित्रित प्रकृति के स्वरूप का निरूपण कीजिए।

अथवा

'प्रियप्रवास' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

5. निम्नलिखित अवतरण के आधार पर 'प्रिय-प्रवास' की काव्य-भाषा की विशेषताओं का विवेचन कीजिए :

अतसि-पुष्प अलंकृतिकारिणी।

शरद नील-सरोरुह रंजिनी।

नवल-सुन्दर-श्याम-शरीर की।

सजल-नीरद सी कल-कान्ति थी।

अथवा

निम्नलिखित अवतरण के आधार पर 'गुनाहों के देवता' की कथा-भाषा का वैशिष्ट्य बताइए :

घर चमक उठा था जैसे रेशम ! लेकिन रेशम के चमकदार, रंगीन उल्लास भरे गोले के अन्दर भी एक प्राणी होता है, उदास स्तब्ध अपनी साँस रोककर अपनी मौत की प्रतीक्षा करने वाला रेशम का कीड़ा। घर के इस सारे उल्लास और चहल-पहल से घिरा रही थी, जिसकी आँखों की चमक धीरे-धीरे डूब रही थी, जिसकी चंचलता ने उसकी नज़रों से विदा माँग ली थी, जिसके उल्लास ने संतोष ने, सुख ने, शांति ने उसके हृदय से विदा माँग ली थी। वह थी-सुधा।

अथवा

निम्नलिखित अवतरण के आधार पर 'नीलदेवी' की नाट्य-भाषा का वैशिष्ट्य बताइए : 9

चलहु बीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहि उड़ाओ।

लेहु म्यान सो खंग खींचि रनरंग जमाओ।

परिकर कसि कटि उठो धनुष पै धरि सर साधो।

केसरिया बानो सजि सजि रन कंकन बाँधौ।